उपन्यास

उपन्यास आधुनिक युग लोकप्रिय विधा है।उपन्यास एक काल्पनिक कथा है जो मानव के बिल्कूल समीप रहती है। मानव जीवन की निकटतम विधा उपन्यास है इसलिए उपन्यास में जीवन की परिस्थितियाँ, चिंता, सुख-दुख आदि बातें अभिव्यक्त की जाती है। अंग्रेजी में उपन्यास के लिए नॉविल शब्द का प्रयोग मिलता है जिसका अर्थ है "जिसमें आधुनिकता और सत्य दोनों की प्रतिष्ठा पाई जाती है" तमिल में उपन्यास शब्द का अर्थ भाषण या व्याख्यान है। गुजराती में नवलकथा शब्द का प्रयोग होता है तो मराठी में 'कादंबरी।

हिंदी 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में भूदेव मुकर्जी ने किया। डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसकी प्रशंसा करते हुए उपन्यास शब्द का अर्थ उप + न्यास = उप = समीप और न्यास = रखना ! अर्थात समीप में रखना दिया है। कुछ अन्य विद्वान उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति उप+नि+आस/अच धातु के योग हुई है ऐसा मानते है और उसका अर्थ समीप में रखना ही मानते है।

परिभाषाएँ

अमरकोश :— "उपन्यास: प्रसादनम"

अर्थात "जो रचना मानव के आत्मा को प्रसादित, आनंदित करती है वह उपन्यास है। "

श्यामसुंदर दास :-- "मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा उपन्यास है। "

प्रेमचंद : – "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्त्व है।"

देवराज उपाध्याय :-- "उपन्यास गद्य साहित्य का अन्यतम रूप है, जिसका आधार कथा है - चाहे वह सीधे मनुष्यों की हो या मनुष्येतर जीव और निर्जीव प्रकृति की चाहे वह सच्ची हो या कल्पित। "

एच. जी. वेल्स :-- वे "उपन्यास को रिक्त मस्तिष्क और रिक्त समय के लिए एक उपयोगी मनोरंजन की वस्तु मानते हैं।"

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी :-- "उपन्यास वह बड़े आकार का गद्यमय आख्यान है जिसके कथानक में ऐसे पात्र और कार्य चित्रित होते है जो वास्तविक जीवन के प्रतिनिधी होने का दावा करते है।"

उपन्यास के तत्व :--

पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानोने उपन्यास विधा का तात्विक विवेचन करते हुए उपन्यास के निम्न तत्व स्वीकार किए है—

1] कथावस्तु :-- उपन्यास की परिभाषाओं में लगभग सभी विद्वानोंने कथानक को या कथावस्तु को महत्व दिया है। अतः कथावस्तु उपन्यास का मूल आधार है। बिना कथा के कोई उपन्यास चल ही नहीं सकता। मानव जीवन में घटित घटनाएँ उपन्यास में स्थान पाते है।

कथावस्तु के काल की दृष्टि से तीन भेद किए जाते है–
1] भूतकाल 2] वर्तमानकाल 3] भविष्यकाल

भूतकाल की कथावस्तु पर आधारित दो तरह के उपन्यास होते है-- ऐतिहासिक और पौराणिक भविष्य की कल्पना करके भी कुछ उपन्यास लिखे गए है जैसे – जैनेन्द्र का 'जयवर्धन' उपन्यास | वर्तमानकाल को आधार बनाकर तो आम तौर पर उपन्यास लिखे ही जाते है।

विषय एवं समस्या की दृष्टि से उपन्यास अनेक प्रकार के होते है क्योंकि मानव जीवन से संबंधित विषय और समस्याएँ अनेक है, अनंत है जैसे- राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि।
कथा संविधान की दृष्टि से कथाएँ दो प्रकार की होती है–

आधिकारिक कथावस्तु :-- आधिकारिक कथा पूरे उपन्यास में आरंभ से अंत तक एक ही होती है । उपन्यास के नायक के जीवन से संबंधित होती है। इस मूल कथा भी कहते है।

प्रासंगिक कथावस्तु :-- प्रासंगिक कथाएँ एक या अनेक होती है। इसका उपयोग आधिकारिक कथा को आगे बढ़ाना ,उसके घटनाओं में श्रृंखला तैयार करना, नायक के जीवन से संबंधित चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करना, मूल समस्या के अतिरिक्त गौण समस्याओं प भी प्रकाश डालने का काम किया जाता है।

2] चरित्र चित्रण :-- कथावस्तु के बाद उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है– पात्र या चरित्र चित्रण | चरित्र चित्रण पात्रों के क्रियाकलाप से संबंध रखता है। पात्रों के क्रियाकलाप ही घटनाओं का कारण बनते है और घटनाओं का श्रृंखलाबद्ध संयोजन कथावस्तु का रूप ग्रहण करता है। पात्रों के बिना कथा का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता |

चरित्र चित्रण करने की अनेक विधियाँ प्रयोग में आती है।

।) कभी उपन्यासकार अपनी ओर से पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करता है।
2)कभी अन्य पात्रों के माध्यम से पात्रों का चरित्र उभरता है।
3)कभी पात्रों के आपसी संबंधो से पात्रों का चरित्र उभरता है।
4) पात्र कभी स्वयं अपने मनोविश्लेषण द्वारा अपनी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करता है ।
चरित्र की दृष्टि से विद्वानों ने तीन प्रकार के चरित्र माने है–

1) उत्तम पात्र – उत्तम पात्र आदर्श पात्र होते हैं।
2) मध्यम पात्र – मध्यम पात्र वह होते है जो अच्छाई और बुराई से संघर्ष करते हुए अच्छाई की ओर बढ़ते है।
3) अधम पात्र – अधम पात्र वह है जो निरंतर बुराई में ही डूबे रहते है।

चरित्र चित्रण में कथावस्तु की अनुकूलता, स्वाभाविकता, मौलिकता, सजीवता, पाठकों को प्रभावित करने की शक्ति आदि गुण और विशेषताएँ होनी चाहिए।

3] कथोपकथन : – कथोपकथन उपन्यास तिसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है जो उपन्यास के स्वरूप गठन में मुख्यतः चार काम करता है– कथावस्त को आगे बढ़ाता है, पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं और आपसी संबंधों को स्पष्ट करता है। घटनाओं में शृंखला तथा संबंध स्थापित करता है तथा उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करता है।
कथोपकथन द्वारा उपन्यासकार उपन्यास में वर्णित घटनाएँ तथा दृश्यों को अपेक्षित रूप तथा सजीवता और मर्मस्पर्शिता उत्पन्न करता है एवं कथा का विस्तार करता है। अनुकूलता, सम्बद्धता, स्वाभाविकता, एवं सहजता, संक्षिप्तता एवं उद्देश्य को उभारने की क्षमता आदि कथोपकथन के अनेक गुण है।

4) देशकाल और वातावरण :-- उपन्यास का चौथा महत्वपूर्ण तत्व है देशकाल और वातावरण। वैसे तो कथावस्तु के अनुरूप देशकाल और वातावरण की निर्मिति नहीं की जाए तो कथावस्तु पाठकों को अरोचक लगेगी। कथावस्तु और देशकाल में भिन्नता हो तो पाठकों पर उसका प्रभाव नहीं पडता। प्राचीन घटनाओं पर यदि उपन्यास की कथावस्तु आधारित होती है उसका देशकाल या वातावरण भी उसी युग के अनुरूप होनी चाहिए। देशकाल और वातावरण में किसी देश या समाज की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज, वहाँ के लोगों का खान-पान, पोशाख आदि बातें देशकाल और वातावरण में अनिवार्य है।

5) भाषा शैली :-- शैली उपन्यास का अलंकार है। उपन्यास की भाषाशैली जितनी प्रभावात्मक होती है उतना उपन्यास प्रभावात्मक हो जाता है। उपन्यास में भाषाशैली तभी प्रभावात्मक होगी जब वह स्वाभाविक, पात्रानुकुल, और परिस्थिति के अनुरुप हो। मुहावरों, कहावतो, अलंकारों, छंदों का भी उपयोग उपन्यास को प्रभावात्मक बनाने के लिए महत्वपूर्ण होता है।
भाषा सहज, सरल, संजीव, रोचक, मर्मस्पर्शी, प्रभावपूर्ण, प्रवाहमयी होनी चाहिए।

6) उदेश्य :-- उदेश्य उपन्यास का अंतिम तत्व है। उपन्यास में विशेषतः स्त्री-पुरुषों के विचारभाव और पारस्पारिक संबंधों को स्पष्ट किया जाता है।
डॉ. प्रतापनारायण टंडन के शब्दों में " आज उपन्यास को केवल एक मनोरंजन के साधन के रूप में ही पाठक ग्रहण और स्वीकार नहीं करना चाहते। वे एक प्रखर और स्पष्ट जीवन दर्शन की माँग करते है।"

अतः हम कह सकते है कि गहराई में जाकर मनुष्य जीवन को विविध पहलुओं को प्रस्तुत करना उपन्यासकार का उद्देश्य होता है।